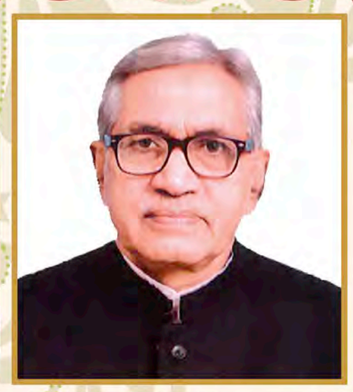

डॉ. महेश शर्मा

Dr. Mahesh Sharma



पद्म श्री

Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

डॉ. महेश शर्मा

डॉ. महेश शर्मा भारत सरकार के खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। मध्य प्रदेश राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के महानिदेशक एवं कार्यकारी अध्यक्ष के पद पर आपकी अंतिम व्यावसायिक नियुक्ति थी। वर्तमान में, आप ग्रामोदय शिवालिक मिशन के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं, जिसका मुख्यालय उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में शाकुम्भरी–शिवालिक वनदृपर्वत श्रेणी पर स्थित है। आप ग्राम–संकुल–योजना का भी समन्वय कर रहे हैं जिसका कार्यालय दीनदयाल अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में है।

2. आपका जन्म उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के नाकुर में 28 मार्च, 1949 को हुआ था। आपने, अपने बड़े भाई डॉ. नरेश कुमार, जो एक सुप्रसिद्ध लेखक और शिक्षविद् हैं, के मार्गदर्शन में नाकुर स्थित आर्य समाज स्कूल तथा मछेरा, मेरठ स्थित किसान विद्यालय से अपनी शिक्षा पूरी की। आपने बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय से यांत्रिक इंजीनियरी में स्नातक की पढ़ाई की और साथ ही आई.आई.टी. दिल्ली से अप्रोपिएट टेक्नॉलोजी सिस्टम में डॉक्टर की उपाधि हासिल की। पूरे शैक्षणिक कार्यकाल के दौरान आपका जीवन दर्शन विद्वतापूर्ण रहा और पाठ्येत्तर क्रियाकलापों में आपका उत्कृष्ट रिकार्ड रहा।

3. आप ग्राम–स्वराज्य की गांधीवादी अवधारणा तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा यथा–प्रतिपादित 'समग्र मानवतावाद' के सच्चे अनुयायी और नियमित कर्ता हैं। आपने अपनी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की लम्बी यात्रा, जो बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से शुरू होकर उत्तर प्रदेश राज्य तक वर्ष 1977–78 के दौरान लगातार पांच वर्षों तक उत्तरी जोन के संगठन सचिव तथा अखिल भारतीय महासचिव के सेवाकाल तक चलती रही, के बाद अपनी पूरी शक्ति ग्रामीण पुनर्निर्माण की दिशा में समर्पित करने का निश्चय किया।

4. वर्ष 1982 में, आपने समग्र स्थायी विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिक प्रबंधन में क्षेत्र–प्रयोग के रूप में विकास भारती बिशुनपुर की स्थापना की। डॉ. राकेश पोपली के साथ आप आई.आई.टी. कैम्पस से झारखंड के जनजातीय क्षेत्र की दूर–दराज बस्ती में चले गए। मगन संग्रहालय, वर्धा के डॉ. देवेन्द्र कुमार के मार्गदर्शन में तथा वास्तुकार वीनू काले के साथ आपने कारीगर पंचायत की स्थापना की जो दस्तकारिता के क्षेत्र में एक राष्ट्रीय प्लेटफार्म के रूप में उभर कर सामने आया। वर्ष 1988, में बड़े पैमाने पर कार्य करने के लिए आपने ग्रामोदय ट्रस्ट की शुरूआत की।

5. आपको अपनी विशेषज्ञता और प्रतिबद्धता के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। आपके योग्य नेतृत्व में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग वर्ष 2003 में नम्बर–1 एफ एम सी जी नेटवर्क के रूप में उभरा, क्योंकि इसे ई.टी. एवं बिजनेस इंडिया द्वारा व्यापक रूप से प्रचारित किया गया। आपको आर बी आई, सिडबी, नाबार्ड, एन आई आर डी, एन सी आर टी एवं सी ए पी ए आर टी (कापार्ट) के बोर्ड/कार्यकारी/सलाहकार पैनलों के लिए नियुक्त किया गया था। आप 2000–2001 में भारत सरकार की राष्ट्रीय गणतंत्र–50–समारोह समिति, जे.पी शताब्दी समारोह समिति तथा वर्ष 2001 में भारत सरकार की महामना मालवीय की 150 वर्षीय समारोह समिति के भी सदस्य रहे। आपको योजना आयोग द्वारा पूर्वी राज्यों में ग्रामीण औद्योगिकीकरण संबंधी उच्च स्तरीय कार्य बल का अध्यक्ष तथा रोजगार सृजन संबंधी विशेष कार्यबल के सदस्य के रूप में भी नियुक्त किया गया। मध्य प्रदेश राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एम पी सी एस टी) में आपने मिशन एक्सलेंस की शुरूआत की जो मेधावी स्कूली छात्रों पर केन्द्रित था।

6. अपने इस दृढ़ विश्वास के साथ कि ग्रामोदय, अंत्योदय–सर्वोदय–अभ्युदय और संयुक्त राष्ट्र द्वारा शुरू किए गए स्थायी विकास के लक्ष्यों की दिशा में आगे बढ़ने की कुंजी है, आपने अपने विद्यार्थी जीवन से लेकर आज तक ग्रामीण विकास के कार्यों में अग्रणी भूमिका अदा की है।

Dr. Mahesh Sharma

Dr. Mahesh Sharma is former Chairman of Khadi & Village Industries Commission (KVIC), Govt. of India. His last professional assignment was as Director General & Executive Chairman of M.P. State Council of Science & Technology. Presently, he is working as Chairman, Gramodaya Shivalik Mission with its HQ at Shakumbari-Shivalik forest range in Dist. Saharanpur, UP. He is also coordinating Gram-Sankul-Yojna with its office at Deendayal Research Institute, New Delhi.

2. Born on 28th March, 1949 at NAKUR in Dist. Saharanpur, UP, Guided by his elder brother Dr. Naresh Kumar, a reputed writer and educationist, he completed his school education from Arya Samaj School at Nakur and Kisan Vidyalaya, Machhra – Meerut. He graduated in Mechanical Engineering from B.H.U. and also Ph.D. in Appropriate Technology System from I.I.T. Delhi. Throughout his academic pursuit, he had a brilliant career and excellent record of extra-curricular activities.

3. Dr. Mahesh Sharma is a staunch believer and regular practitioner of Gandhian concept of Gram-Swarajya and Integral Humanism as propounded by Pt. Deendayal Upadhyay. After his long journey in Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad from B.H.U. to U.P. State to North zone Organising Secretary and All India General Secretary for successive five years during 1977-78, he decided to devote his full energy towards rural-reconstruction.

4. In 1982, he founded Vikas Bharati Bhishunpur as a field experiment in scientific management of natural resources for integral sustainable development. Alongwith Dr. Rakesh Popli, he shifted from IIT campus to a remote cluster in Jharkhand tribal region. Guided by Dr. Devendra Kumar of Magan Sangrahalaya Wardha and accompanied by architect Vinoo Kaley, he founded Karigar Panchayat which emerged as a national platform of artisan sector. In 1988, he launched Gramodaya Trust to work on a larger scale.

5. Dr. Sharma has been widely recognized for his expertise and commitment. Under his able leadership, KVIC emerged as No.1 FMCG network in 2003, as widely publicized by E.T. and Business India. He was appointed to the Board / Executive / Advisory Panels of RBI, SIDBI, NABARD, NIRD, NCRI & CAPART. He was a member of Govt. of India National Committee on Republic – 50 Celebrations in 2000-2001, JP Centenary Celebrations Committee & also Mahamana Malviya 150 years Celebrations Committee of Govt. of India in 2010. He was appointed Chairman of High-level Task Force on Rural Industrialisation in Eastern States by Planning Commission and Member of the Special Task Force on Employment Generation. At MPCST, he launched Mission Excellence focused on meritorious school students.

6. Dr. Mahesh Sharma has played a pioneering role in the tasks of rural development right from his student days till today with his firm conviction that Gramodaya is the key to Antyodaya – Sarvodaya – Abhyudaya and for moving towards sustainable development goals initiated by United Nations.